International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उत्तर प्रदेश की सामाजिक-धार्मिक विरासतें एवं देवी अहिल्याबाई होलकर

Vishal, Research Scholar, Department of History,
M.M. College, Modinagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh.

Prof.Asha Yadav (H.O.D), Supervisor, Department of History,
M.M. College, Modinagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh.

शोध सारांश:-

मध्यकाल के समाप्त होते-होते देश से मुगल सत्ता का प्रभाव भी समाप्त हो गया। यह स्थान अब मराठों ने ग्रहण कर लिया मराठों ने संपूर्ण उत्तर भारत, मध्य भारत एवं दक्कन के बड़े क्षेत्रफल पर अपना अधिकार कर लिया। इसी समय मालवा में भी मराठा होलकर सरदार अपना प्रभाव बढ़ा रहे थे इसी वंश में एक अति प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली शासिका देवी अहिल्याबाई होलकर हुई। अहिल्याबाई होलकर अपने ससुर मल्हारराव होलकर की मृत्यु के बाद इंदौर की शासक बनी। उनके 29 वर्ष के शासनकाल में होलकर राजवंश एवं इंदौर राज्य की कीर्ति बढ़ गई। इनकी प्रसिद्धि इनके राजनीतिक कार्यो से अधिक धार्मिक एवं सामाजिक कल्याणकारी कार्यों के कारण हुई। उन्होंने अपनी सास से विरासत में मिली निजी संपत्ति (खासगी) का उपयोग धार्मिक एवं लोक कल्याणकारी कार्यों में किया। उन्होंने धर्म की प्रतिष्ठा एवं पुनर्जागरण के लिए न केवल विदेशी आक्रांताओं द्वारा अपवित्र हुए धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण ही कराया अपितु उनके कुशल संचालन का भी प्रबंध किया। उनके यह धार्मिक एवं लोक कल्याणकारी कार्यों केवल होलकर राज्य तक सीमित नहीं रहे अपितु देशभर की चारों दिशाओं में हुए। इन कार्यों के प्रमाण आज भी देखे जा सकते हैं। विशेष रूप से धर्म संस्कृति के लिए विशिष्ट रूप से प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश में उन्होंने मथुरा-वृंदावन, अयोध्या, सीतापुर, प्रयागराज, कानपुर, काशी, सरधना एवं संभल जैसे स्थानों पर अनेकों धार्मिक स्थलों का निर्माण कराया। नदियों किनारे अनेक पक्के घाटों एवं धर्मशालाओं का निर्माण कराया। अपने इन कार्यों से अहिल्याबाई होलकर लोकमाता, पुण्य श्लोका एवं दार्शनिक रानी जैसे अलंकरणों से अलंकृत हैं।

बीज शब्द :- अहिल्याबाई होलकर एवं धार्मिक विरासत, मराठा काल में धार्मिक पुनर्जागरण, अहिल्याबाई होलकर के जन कल्याणकारी कार्य |

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रस्तावना:-

अहिल्याबाई होलकर का जन्म महाराष्ट्र के गांव के पाटिल (मुखिया) माणकोंजी शिंदे के घर 31 मई सन् 1725 ई० को हुआ। सन् 1733 ई० में उनका विवाह मालवा के मराठा सूबेदार एवं होलकर राज्य के संस्थापक मल्हार राव होलकर के पुत्र खंडेराव होलकर से हुआ। पति खंडेराव की मृत्यु सन् 1754 ई० में कुम्भेर के युद्ध में हो गई। सन् 1759 ई० में सास गौतमाबाई एवं 1766 ई० में ससुर सूबेदार मल्हार राव होलकर की भी मृत्यु हो गई। ससुर की मृत्यु के बाद मालवा के होलकर राज्य का समस्त उत्तरदायित्व देवी अहिल्याबाई पर आ गया। राज्य के राजकोष के अतिरिक्त अहिल्याबाई को विरासत में अपनी सास की निजी संपत्ति खासगी भी प्राप्त हुई। ये खासगी जागीर 20 जनवरी 1734 ०ई को मल्हार राव होलकर उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पेशवा द्वारा उनकी पत्नी गौतमाबाई के नाम दी गई। इसके अंतर्गत दक्षिण में कुछ भूमि, मालवा का महेश्वर जिला और इंदौर जिले के नौ गांव थे।[1] इसकी प्रारंभिक आय लगभग 3 लाख रुपए थी।[2] पेशवा ने 11 दिसंबर सन् 1767 ई० को खासगी तथा अन्य इनाम उन्हें होलकर राज्य के वास्तविक प्रधान के रूप में दिए।[3] अहिल्याबाई होलकर के शासनकाल तक यह आय बढ़कर 15 लाख रुपए के आसपास हो गई थी। उनके सभी धार्मिक एवं लोक कल्याणकारी कार्य इसी निजी संपत्ति खासगी से किए गए। इन कार्यों में राजकीय कोष का उपयोग बिल्कुल नहीं किया गया। उन्होंने पूरे भारतवर्ष में धर्म जागरण के लिए विभिन्न मंदिरों, विश्राम स्थलों, मार्गो, तालाबों, अन्नक्षेत्रों व प्रमुख पवित्र घाटों आदि का नव निर्माण जीर्णोद्धार कराया एवं उनके प्रबंधन की भी व्यवस्था की।

काशी की धार्मिक विरासतों के जीर्णोद्धार में देवी अहिल्याबाई होलकर की भूमिका

उत्तर प्रदेश में स्थित काशी या आधुनिक वाराणसी को भगवान शिव की नगरी माना जाता हैं। इसकी धार्मिक महत्ता पुराणों में बताई गई है। यह सात मोक्षदायिनी पुरियों में से एक है। यहां 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक विश्वनाथ स्थापित है। हिंदुओं के इस पवित्र मंदिर को मुगल सम्राट औरंगजेब ने सन् 1669 ई० में नष्ट कर दिया था तथा इसके स्थान पर एक मस्जिद बनवा दी थी। सन् 1742 ई० में पेशवा बालाजी बाजीराव ने मिर्जापुर में अपनी सवारी रुकवा कर बनारस ले लेने की इच्छा की। मल्हार राव का विचार ज्ञानवापी मस्जिद को गिराकर पुनः विश्वेश्वर मंदिर बनाने का हुआ।[4] लेकिन उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी क्योंकि उसे समय बनारस अवध के नवाब के अधीन था।

सन् 1780 ई० में अहिल्याबाई होलकर ने पुनः इस पर विचार किया। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का निश्चय किया उन्होंने एक पत्र अवध के नवाब को भेजा जिनका वाराणसी पर नियंत्रण था उनसे प्रार्थना करते हुए आज्ञा एवं सहयोग मांगा। नवाब मान गए और अहिल्याबाई ने अपने दूतों बढई राजमिस्त्रियों एवं शिल्पकारों को रुपए सामग्री एवं मंदिर के भावी मानचित्र के साथ भेजा। मंदिर सन 1785 ई० में पूरा हो गया था। इसकी प्राण प्रतिष्ठा अहिल्याबाई होलकर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ने स्वयं की।[5] यह मंदिर अहिल्याबाई होलकर ने मस्जिद के बगल में बनवाया। अहिल्याबाई होलकर का बनारस अभिलेख भी उनकी धार्मिक वृत्ति और धार्मिक स्थानों की भव्य निर्माण कार्यों की योजना पूर्ति का प्रमाण है।[6] उसमें अपनी सास तथा मल्हार राव होलकर की धर्मपत्नी गौतमबाई के एवं अपने नाम पर अहिल्याबाई द्वारा निर्मित दो मंदिरों- "गौतमेश्वर" एवं "अहिल्योद्धार-केश्वर" का उल्लेख है। और मणिकर्णिका घाट के भव्य निर्माण का वर्णन है।[7] यह निर्माण कार्य गुरुवार, वैसाख शुक्ल 2 नि. सं. 1847 (5 मई 1791 ई०) को पूर्ण हुआ।[8]

काशी के मंदिर, घाटों आदि की एक सूची जो प्राप्त होती है इस प्रकार है-

1- मणिकर्णिका घाट : मणिकर्णिका घट्ट: क्र. 3 व 7

2 -चार मंदिर (गंगा का तथा तीन अन्य) : घाट के दोनों ओर दो

3- श्री तारकेश्वर मंदिर गौतमेश्वर नामक दो मंदिर : तारकेश्वर क्र. 5

4- छः निजी मंदिर : अहिल्याद्वारकेश्वर क्र. 5।[9]

यह सूची शिलालेखों के आधार पर ही बनाई गई है। मणिकर्णिका घाट के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने मणिकर्णिका नामक कुंड बनवाया था जिससे इस घाट का नामकरण हुआ। इसका खर्च लगभग ₹ 25000 हुआ था।[10] सन् 1785 ई० में ही दशाश्वमेध घाट भी बनवाया।[11] अन्य घाटों के नाम जनाना घाट अहिल्या घाट आदि हैं।

काशी में ही अहिल्याबाई होलकर ने अन्नपूर्णा मंदिर उत्तरकाशी धर्मशाला रामेश्वरम पंचकोशी धर्मशाला कपिलधारा धर्मशाला आदि का निर्माण कराया।[12] काशी से कोलकाता जाने वाले मार्ग का निर्माण भी कराया गया। काशी के अतिरिक्त पूरे उत्तर प्रदेश के लगभग हर महत्वपूर्ण धार्मिक तीर्थ क्षेत्र में अहिल्याबाई होलकर द्वारा विभिन्न मंदिरों घाटों धर्मशालाओं के निर्माण एवं अन्य लोक कल्याणकारी कार्यों का विवरण होलकर संग्रहालय रजवाड़ा इंदौर में संग्रहित है।

अयोध्या जो प्राचीन काल से ही हिंदू धर्म के लिए अति पवित्र नगर रहा है उसमें श्री राम मंदिर, श्री त्रेताराम मंदिर, श्री भैरव मंदिर, नागेश्वर मंदिर सरयू नदी पर दो घाट, कुआं एवं मोहताज खाना का निर्माण कराया गया। चित्रकूट उत्तर प्रदेश में श्रीराम पंचायतन मंदिर बनवाया। एवं उसमें पांचो मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की। नेमिषारण्य सीतापुर उत्तर प्रदेश में महादेव मढ़ी, नीमसार धर्मशाला गोघट एवं चक्र तीर्थ कुंड बनवाए।

मथुरा-वृंदावन:-

ब्रजमंडल के आधार मथुरा वृंदावन का भारतीय संस्कृति में अपना विशेष स्थान है। ब्रज संस्कृति के संरक्षण में अहिल्याबाई होलकर का विशेष योगदान है। यहां पर चैन बिहारी मंदिर कालियादेह घाट, चीर घाट एवं एक धर्मशाला का निर्माण कराया यहां पर एक विशिष्ट लाल पत्थर की बावड़ी बनवाई जिसमें 57 सीढ़ियां बनी है।[13] ब्रज संस्कृति शोध संस्थान

के अनुसार अहिल्याबाई होलकर ने मथुरा में अहिल्यागंज का निर्माण कराया। यहीं पर उन्होंने एक अन्न क्षेत्र का भी निर्माण कराया।

कानपुर के निकट बिठूर में एक ब्रह्म घाट बनवाया। मेरठ की सरधना तहसील में चंडी देवी मंदिर बनवाया।[14] संभल उत्तर प्रदेश में लक्ष्मी नारायण मंदिर की स्थापना की एवं दो कुएं बनवाएं। संगम नगरी प्रयागराज में भी एक बड़े घाट का निर्माण कराया।[15] यहीं पर एक विष्णु मंदिर एक धर्मशाला फूलों का बाग एवं सरकारी बाड़े का निर्माण कराया गया।[16] उनकी तीर्थों को दिए गए एक वर्षीय दान का विवरण जो प्राप्त होता है जिसकी कुल राशि 31031 रुपए थी जिसमें से उत्तर प्रदेश के श्री प्रयाग, श्री काशी, श्री वृंदावन, श्री अयोध्या एवं श्री चित्रकूट प्रमुख तीर्थ थे।[17]

निष्कर्ष:-

अहिल्याबाई होलकर मराठा संघ एवं होलकर राजवंश की एक प्रतिष्ठित स्त्री इसलिए बनी क्योंकि उन्होंने अपना पूरा जीवन धर्म को समर्पित कर दिया। उन्होंने लंबे समय से पीड़ित धर्म को एक नवीन ऊर्जा प्रदान की। उनके लोक कल्याणकारी एवं धार्मिक कार्य उनके राज्य तक सीमित नहीं रहे अपितु राज्य की सीमा से बाहर पूरे राष्ट्र में फैल गए। उन्होंने न केवल धार्मिक स्थलों घाटों एवं विश्राम स्थलों का निर्माण जीर्णोद्धार कराया बल्कि उनके संचालन एवं प्रबंधन का भी समुचित प्रबंध किया। मध्यकाल की धार्मिक क्षति को उनके सुकृत्यों ने एक नवीन क्षतिपूर्ति प्रदान की।

उत्तर प्रदेश में भी विशेष रूप से सभी प्रमुख धार्मिक तीर्थ स्थल काशी, मथुरा, अयोध्या, प्रयागराज चित्रकूट आदि स्थानों पर उनके द्वारा कराए गए निर्माण आज भी उनके धर्म निष्ठ जीवन के प्रमाण है। भारत में तीन-चार सौ वर्ष पुराने जो भी मंदिर इस्लामी आक्रमणों के बाद आज बचे दिखते हैं, करीब-करीब हर एक के निर्माण में रानी अहिल्याबाई होलकर का योगदान है।[18] उनका पूरा शासनकाल लोक कल्याण एवं धार्मिक पुनर्जागरण को समर्पित था देवी अहिल्याबाई होलकर अपने इन्हीं कृत्यों के चलते दार्शनिक रानी, पुण्य श्लोका एवं लोकमाता जैसी उपाधियों से विभूषित हुई। वास्तव में वे अपने महान योगदान से राजश्री से राज ऋषि बन गई थी।

संदर्भ सूची:-

1. वी०वी० ठाकुर, होलकर शाहिच्चा इतिहासांची सन्धानेन, भाग-1, इंदौर, 1944, पृष्ठ सं० - 19-20

2. वही |

3. पी० के० सेठी,एस०के० भट्ट, "ए स्टडी ऑफ़ होलकर स्टेट क्वायनेज", प्रथम संस्करण, 1976, पृष्ठ सं०- 13 |

4. डॉ मोतीचंद्र, काशी का इतिहास, प्रथम संस्करण 1962, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड हीराबाग बंबई- 4, पृष्ठ सं० -298 |

5. This Indian Queen restored Hindu temples destroyed by the Mughals, timesofindia.com https://timesofindia.indiatimes.com/etimes/trending/this-indian-queen-restored-hindu-temples-destroyed-by-the-mughals/photostory/107562071.cms, 28/02/2025 |

6. स० क० दीक्षित, रामसेवक गर्ग, हीरालाल शर्मा (संपा), अहिल्या स्मारिका 1970, खासगी (देवी अहिल्याबाई होलकर चैरिटीज) ट्रस्ट, इंदौर, पृष्ठ सं० – 24 |

7. वही |

8. वही |

9. वही, पृष्ठ सं० – 25 |

10. विनया खडपेकर, ज्ञात-अज्ञात देवी अहिल्याबाई होलकर, छाया राजे (अनु०), मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2010, पृष्ठ सं० – 495 |

11. वही |

12. मधुसूदन राव होलकर, होलकरों का इतिहास, अखिल भारतीय होलकर महासंघ, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2000, पृष्ठ सं० – 262 |

13. वही, पृष्ठ सं०- 263 |

14. वही |

15. विनया खडपेकर,वही, पृष्ठ सं०- 497 |

16. मधुसूदन राव होलकर, वही, पृष्ठ सं० – 263 |

17. वी०वी० ठाकुर, होलकर स्टेट हिस्ट्री, भाग-2 पृष्ठ सं० - 56-57.

18.अहिल्याबाई:जिन्होंने कराया मंदिरों का जीर्णोद्धार,आनंद कुमार, www.bhartiyadharohar.com 28/02/2025